प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/29

घोड़े में होनेवाली प्रमुख बीमारियाँ

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

घोड़ा में होनेवाली प्रमुख बीमारियाँ एवं उपचार

डा0 बिपिन कुमार, सहायक प्राध्यापक, औषधि विभाग
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय, पटना
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

परिचयः–

हमारे देश में घोड़े की प्रजाति की संख्या लाखों में है, लेकिन इस प्रजाति के जानवरों के इलाज हेतू समुचित व्यवस्था एवं प्रशिक्षित चिकित्सकों की संख्या बहुत ही कम है। अतः किसान भाई जिनके पास घोड़ा, गधा, खच्चर इत्यादि है उनके इन सब जानवरों में होनेवाली प्रमुख बीमारियों के बारें में प्राथमिक जानकारी अत्यंत आवश्यक है। अतः घोड़े म होनेवाली प्रमुख बीमारियाँ निम्नलिखित है। जिनके बारे में किसान भाईयों को कुछ ज्ञान अवश्य रखना चाहिए।

1. पेट दर्द (कोलिक)
2. सर्रा (ट्रीपेनोसोमिएसिस)
3. लंगड़ापन (लेमनेस)
4. श्वसन तंत्र का विकार/संक्रमण
5. घाव/फोड़ा

(1) पेट दर्द (कोलिक):– घोड़े में होनेवाली सबसे प्रमुख बीमारी है और करीब–करीब सभी घोड़ों में जरूर होता है। इसके बहुत सारे कारण होते है। इसके प्रमुख लक्षण निम्नलिखित है।

- अचानक खाना पीना छोड़ देना।
- आगे वाला पैर से जमीन को खोदना।
- उठ बैठ करना।
- अत्यधिक बेचैनी होना।
- पैर से पेट में मारना।
- पेट में गैस बनना इत्यादि

चूँकि यह बीमारी में अगर देर हो जाता है तो घोड़ो की मौत भी हो जाती है। अतः शीघ्रता शीघ्र योग्य पशु चिकित्सक से इलाज करायें।

कोलिक बीमारी से ग्रसित घोड़ा में फ्लूड थेरापी।

(2) सर्रा (ट्रीपेनोसोमिएसिस):- यह एक परजीवी जनित बीमारी है, जो टैबेनस नामक मक्खी के काटने से फैलता है। इस मक्खी को डांसा भी कहा जाता है।

इसके प्रमुख लक्षण निम्नलिखित है।

- अनियमित बुखार होना।
- शरीर का वजन दिनोदिन घटते जाना।
- खाने पीने में रूचि घटना।
- खून की कमी।
- पैर एवं पेट के नीचले भाग में सूजन।
- बेचैनी, अत्यधिक दिमागी लक्षण, दिवाल में ढाई मारना, हवा में काटने की प्रवृत्ति।
- कभी–कभी अंधापन एवं अनियंत्रित उछल कूद इत्यादि इसके प्रमुख लक्षण है।

इसका उपचार जितना शीघ्र हो सके करना चाहिए ताकि जान बचाया जा सके। इससे बचाव के लिए डांसा मक्खी काटने से जानवरों को बचाना चाहिए।

(3) लंगड़ापन (लेमनेस):– यह तीसरा प्रमुख बीमारी है जिसके बहुत सारे कारण होते हैं। घोड़ा कभी–कभी चारो पैर, तीन पैर, दो पैर या एक पैर से लंगड़ाना शुरू कर देता है।

(क) लैमीनाइटिस (ख) स्प्रेन (ग) लिगामेंट रपचर (घ) ओसटाइटिस इत्यादि।

अतः इसका इलाज योग्य पशु चिकित्सक से करायें ताकि घोड़े की उपयोगिता बरकरार रहे।

लंगड़ापन से ग्रसित घोड़ा।

(4) सांस संबंधित बीमारीः– सांस संबंधित बीमारी होने के प्रमुख कारण संक्रमण होता है। इसके अलावा एलर्जी भी एक प्रमुख कारण है।

सांस संबंधित बीमारी का प्रमुख लक्षण निम्न है।

- सांस लेने में तकलीफ।
- हॉफना।
- नाक से श्राव निकलना।
- खाँसी होना।
- भूख न लगना।
- बुखार एवं कमजोरी होना इत्यादि।

इसका उपचार हेतू योग्य पशुचिकित्सक से सम्पर्क करें।

(5) घाव/फोड़ाः– घाव, फोड़ा, फुंसी आमतौर पर सभी जानवरों में होता है। चूँकि घोड़ा का उपयोग सवारी एवं माल ढुलाई में होता है अतः कटने, चोट लगने की संभावना अधिक होती है। इसके अतिरिक्त घोड़ा टेटनस के प्रति बहुत ही संवेदनशील होता है अतः मोटा घाव होने पर भी टेटनस टॉक्सॉइड का टीका अवश्य लगवायें।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरणः- विपिन कुमार सिंह एवं पुष्पेन्द्र कुमार सिंह

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक,प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021 Printed Under - SC -PLAN